The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 1 | January 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

पर्यावरण शिक्षा में माध्यमिक शिक्षकों की भूमिका

डॉ0 अन्तिमबाला पाण्डेय[1], विनीता कुमारी मित्तल[2]

[1]शोध मार्गदर्शक, सतत शिक्षा विभाग, विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन

[2]शोधार्थी, सतत शिक्षा विभाग, विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Keywords:

पर्यावरण शिक्षा, पर्यावरण, नागरिक, समाज, दार्शनिक

ABSTRACT

शिक्षक की भूमिका वर्तमान में पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। शिक्षक छात्रों को जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए तैयार करके देश के भविष्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं जो देश के विकास में योगदान देंगे। इस महत्वपूर्ण भूमिका को देखते हुए, हम कह सकते हैं कि शिक्षक हमारे समाज की नींव का निर्माण कर रहे हैं। ऐतिहासिक रूप से, शिक्षकों का एक महत्वपूर्ण स्थान रहा है, लेकिन आज की दुनिया में, उनकी ज़िम्मेदारियाँ विकसित हो गई हैं। एक शिक्षक को अब एक मित्र, दार्शनिक और नेता के रूप में विभिन्न भूमिकाएँ निभाने की ज़रूरत है। हम केवल सामान्य गुणों वाले शिक्षकों के बजाय रचनात्मक और अद्वितीय कौशल वाले शिक्षकों की तलाश करते हैं। यह आवश्यक है क्योंकि वे छात्रों को हर क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा से भरे भविष्य के लिए तैयार कर रहे हैं। इस प्रतिस्पर्धी परिदृश्य में, व्यक्तियों को जीविकोपार्जन के लिए अपने विशेष कौशल और विशेषताओं पर भरोसा करना चाहिए।

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.14863186

पर्यावरण शिक्षा में शिक्षकों की भूमिका

शिक्षक पारंपरिक विषयों के साथ-साथ छात्रों को पर्यावरण शिक्षा के बारे में ज्ञान प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। आज की दुनिया में, छात्रों के लिए पर्यावरण के मुद्दों को समझना आवश्यक है। शिक्षकों की जिम्मेदारी छात्रों के बीच बदलते पर्यावरण, इसकी आवश्यकताओं और इसके प्रभावों, जिसमें दुष्प्रभाव और परिणाम शामिल हैं, के बारे में जागरूकता बढ़ाना है।

अतीत में, मानवीय ज़रूरतें सीमित थीं और विकल्प कम थे। हालाँकि, वर्तमान में, मानवीय ज़रूरतों की कोई सीमा नहीं है, जिसके कारण विकल्पों की भरमार है। इस बढ़ती माँग ने पर्यावरण पर अनावश्यक बोझ डाला है। पर्यावरण शिक्षा छात्रों को पर्यावरण के विभिन्न घटकों को पहचानने और यह समझने में मदद करने के लिए महत्वपूर्ण है कि मानवीय गतिविधियाँ इसे कैसे प्रभावित करती हैं। छात्रों के लिए यह जानना ज़रूरी है कि उनकी ज़रूरतों और विकल्पों का पर्यावरण पर क्या प्रभाव पड़ता है।

पर्यावरण शिक्षा में शिक्षक के कर्तव्य और भूमिका

पर्यावरण शिक्षा में शिक्षक की भूमिका को निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से संक्षेप में प्रस्तुत किया जा सकता हैः

1.छात्रों में पर्यावरण के प्रति रुचि उत्पन्न करनाः

शिक्षकों को छात्रों में पर्यावरण के प्रति रुचि जगानी चाहिए। यह रुचि सीखने की प्रक्रिया को आरंभ करने और बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। पर्यावरण विषयों पर पाठ पढ़ाने से पहले, शिक्षकों को विषय के प्रति उत्साह पैदा करना चाहिए। जब छात्र और शिक्षक दोनों पर्यावरण में रुचि साझा करते हैं, तो शिक्षण और सीखने की गुणवत्ता में उल्लेखनीय सुधार होता है। रचनात्मक और आकर्षक शिक्षण विधियाँ अंततः समग्र सीखने के अनुभव को बढ़ाती हैं।

2. पर्यावरण के बारे में जागरूकता और जिज्ञासा पैदा करें:

शिक्षकों को अपने छात्रों में पर्यावरण के बारे में जागरूकता और जिज्ञासा पैदा करने के लिए काम करना चाहिए। ज्ञान की शुरुआत जिज्ञासा और जागरूकता से होती है। आज मानव ज्ञान की उन्नति विभिन्न विषयों के प्रति हमारी जिज्ञासा और समझ का परिणाम है। पर्यावरण शिक्षा को प्रभावी ढंग से प्रदान करने के लिए, शिक्षकों को पर्यावरण के मुद्दों के बारे में जिज्ञासा को उत्तेजित करने की आवश्यकता है। मनुष्य पर्यावरण से किस तरह जुड़ा हुआ है, पर्यावरण में होने वाले बदलावों का मानव जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है और किस तरह से पर्यावरण को नुकसान पहुँच रहा है, जैसे सवालों पर चर्चा और पूछताछ होनी चाहिए।

3. पर्यावरण चुनौतियों के बारे में छात्रों को जागरूक करें:

आज हमारी दुनिया के सामने आने वाली विभिन्न पर्यावरणीय चुनौतियों के बारे में छात्रों को सूचित करना शिक्षकों की जिम्मेदारी है। ये चुनौतियाँ मुख्य रूप से मानवीय आकांक्षाओं और जरूरतों के कारण उत्पन्न होती हैं, जिनमें शामिल हैः

- मानव आवासों का क्षरण

- मिट्टी और भूमि संसाधनों का क्षरण
- वानिकी संसाधनों का क्षरण
- मत्स्य संसाधनों का क्षरण
- जल संसाधनों का क्षरण
- जैविक विविधता का क्षरण
- जलवायु परिवर्तन और वायु गुणवत्ता के मुद्दे
- औद्योगिक ऊर्जा, खनन और पर्यावरण संबंधी चिंताओं के प्रभाव

इन बिंदुओं पर ध्यान देकर, शिक्षक पर्यावरण संबंधी मुद्दों के बारे में अपने छात्रों की शिक्षा और जागरूकता में प्रभावी रूप से योगदान दे सकते हैं।

4. छात्रों के साथ पर्यावरण संबंधी समस्याओं और मुद्दों पर चर्चा करना

पर्यावरण शिक्षा शिक्षकों के लिए छात्रों को विभिन्न पर्यावरणीय समस्याओं और संबंधित विषयों पर चर्चा में शामिल करना आवश्यक है। शिक्षकों को अपने छात्रों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ावा देने का लक्ष्य रखना चाहिए। इसका मतलब है कि छात्रों को कारण-और-प्रभाव संबंधों के आधार पर अपने विचार व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करना। ऐसा दृष्टिकोण न केवल छात्रों के दृष्टिकोण को व्यापक बनाता है बल्कि उन्हें कई कोणों से स्थितियों पर विचार करने में भी मदद करता है।

5. शैक्षिक यात्राओं और भ्रमणों की व्यवस्था करना

शिक्षकों को न केवल सैद्धांतिक ज्ञान प्रदान करने पर बल्कि व्यावहारिक शिक्षण अनुभव प्रदान करने पर भी ध्यान केंद्रित करना चाहिए। जबकि पाठ्यपुस्तक का ज्ञान महत्वपूर्ण है, इसे व्यावहारिक उदाहरणों के माध्यम से समझना महत्वपूर्ण है। शैक्षिक दौरे और यात्राएँ पर्यावरण शिक्षा के संदर्भ में अत्यधिक लाभकारी हैं, क्योंकि वे छात्रों को व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करने और प्राकृतिक संसाधनों और पर्यावरणीय चुनौतियों के बारे में सीधे संपर्क करने की अनुमति देते हैं।

6. व्यावहारिक कार्य के लिए आवश्यक सामग्री प्रदान करना

शिक्षकों के लिए अपने छात्रों को व्यावहारिक शिक्षण के लिए आवश्यक संसाधन प्रदान करना महत्वपूर्ण है। पर्यावरण शिक्षा को प्रभावी ढंग से पढ़ाने के लिए, शिक्षकों को विषय से संबंधित प्रासंगिक पुस्तकों, पुस्तिकाओं, निर्देशात्मक सामग्रियों और व्यावहारिक मार्गदर्शिकाओं तक पहुँच प्रदान करनी चाहिए।

7. पर्यावरण ज्ञान पर विभिन्न भाषणों की व्यवस्था करना

पर्यावरण शिक्षा के शिक्षकों को न केवल अपनी विशेषज्ञता के माध्यम से बल्कि समय-समय पर अतिथि वक्ताओं को लाकर भी अपने छात्रों की शिक्षा को समृद्ध करना चाहिए। विभिन्न वक्ताओं की अंतर्दृष्टि छात्रों की समझ को बढ़ा सकती है और उनके ज्ञान के आधार को व्यापक बना सकती है। यह दृष्टिकोण छात्रों को नए दृष्टिकोण तलाशने की अनुमति देता है, जिससे शिक्षकों के लिए समय-समय पर विभिन्न विशेषज्ञों द्वारा वार्ता और प्रस्तुतियाँ आयोजित करना महत्वपूर्ण हो जाता है।

11. नवीकरणीय और गैर-नवीकरणीय संसाधनों के बारे में जागरूकता पैदा करनाः

पर्यावरण शिक्षा के शिक्षकों के लिए यह आवश्यक है कि वे छात्रों को नवीकरणीय और गैर-नवीकरणीय संसाधनों के बारे में ज्ञान प्रदान करते रहें। छात्रों को जागरूक किया जाना चाहिए ताकि वे इन संसाधनों के बीच अंतर कर सकें और उनके महत्व को समझ सकें। छात्रों को प्राकृतिक संसाधनों के बारे में ज्ञान प्रदान करना भी पर्यावरण शिक्षा के शिक्षक की जिम्मेदारी है। छात्रों को यह बताना आवश्यक है कि दुनिया में किस संसाधन का उपयोग किस स्तर पर किया जा रहा है, कौन सा संसाधन आसानी से उपलब्ध है और कौन सा जटिल है।

12 पर्यावरण संरक्षण गतिविधियों में छात्रों की भागीदारी बढ़ानाः

पर्यावरण गतिविधियों में छात्रों का सहयोग करना आवश्यक है। इन कार्यक्रमों और गतिविधियों में सहयोग करने से छात्र पर्यावरण के प्रति अधिक संवेदनशील बनेंगे। वे पर्यावरण के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को अच्छी तरह से समझ पाएंगे और पर्यावरण संरक्षण में योगदान दे पाएंगे। शिक्षक छात्रों को जागरूक करेंगे और उन्हें पर्यावरण के बारे में अन्य लोगों को जागरूक करने के लिए प्रेरित करेंगे। इससे छात्रों में सहयोग, भागीदारी और आत्मविश्वास की भावना बढ़ेगी।

13 छात्रों को विषैले उत्पादों और प्रकृति पर उनके प्रभाव के बारे में जागरूक करनाः

पर्यावरण शिक्षा में यह आवश्यक है कि शिक्षक अपने छात्रों को विभिन्न विषैले उत्पादों के बारे में जागरूक करें। छात्रों को यह बताना बहुत जरूरी है कि इन विषैले उत्पादों का पर्यावरण पर क्या प्रभाव पड़ता है। उदाहरण के लिए, छात्रों को यह ज्ञान देना बहुत जरूरी है कि पॉलीथीन और कीटनाशकों के दुष्प्रभाव पर्यावरण को किस हद तक नुकसान पहुंचा रहे हैं, इसे कैसे नियंत्रित किया जाएगा और इसे नियंत्रित करने के लिए क्या कदम उठाने होंगे। कौन से पदार्थ पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने में कारगर हैं? इससे छात्रों में पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता पैदा होगी और वे पदार्थों को समझकर इसे नियंत्रित करने का प्रयास कर सकेंगे।

14 छात्रों को पर्यावरण संरक्षण के तरीकों के बारे में जागरूक करनाः

पर्यावरण शिक्षा केवल पर्यावरण के ज्ञान तक ही सीमित नहीं है बल्कि इसमें इसका संरक्षण भी शामिल है। शिक्षक छात्रों को पर्यावरण के हर घटक का ज्ञान तो देता ही है लेकिन छात्रों को यह भी बताना जरूरी है कि पर्यावरण का संरक्षण कैसे किया जाए। इससे न केवल छात्र जागरूक होंगे बल्कि वे पर्यावरण के संरक्षण में अपना योगदान भी दे सकेंगे। वे अपने घर से ही इसकी शुरुआत करेंगे और अपने संपर्क में आने वाले अन्य लोगों को भी जागरूक करेंगे और उन्हें लाभान्वित करेंगे।

अध्ययन के निष्कर्ष-

पर्यावरण शिक्षा के शिक्षक का कर्तव्य है कि वे छात्रों को विभिन्न प्रकार के प्रदूषण जैसे वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, मृदा प्रदूषण आदि के बारे में जागरूक करें ताकि वे इसके कारणों का पता लगा सकें और अन्य लोगों को इसके बारे में जागरूक कर सकें। इसके साथ ही छात्रों को विभिन्न प्रकार के प्रदूषकों के बारे में भी बताया जाना चाहिए। विभिन्न प्रदूषक जैसे ग्राउंड लेवल ओजोन, लेड, सल्फर डाइऑक्साइड, नाइट्रोजन डाइऑक्साइड, कार्बन मोनोऑक्साइड आदि विभिन्न प्रदूषक हैं जो पर्यावरण को लगातार नुकसान पहुंचा रहे हैं।

इसलिए हम कह सकते हैं कि एक शिक्षक का काम आसान नहीं है, बल्कि उन छात्रों को पर्यावरण के प्रति जागरूक और जिम्मेदार नागरिक बनाने की जिम्मेदारी है ताकि वे न केवल पर्यावरण के सिद्धांतों को समझ सकें बल्कि इसके संरक्षण को भी समझ सकें।

संदर्भ:

1. पर्यावरण शिक्षा, डॉ. शालिनी सिंह ,आगराः अग्रवाल पब्लिकेशन्स।
2. पर्यावरण शिक्षा, डॉ. दीप्ति जैन ,लुधियानाः कल्याणी पब्लिशर्स।
3. पर्यावरण संकट, इराक बरुचा, टाटा मैकग्रा हिल नई दिल्ली
4. पर्यावरण अध्ययन, डॉ. रतन जोशी, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी जयपुर
5. पर्यावरण अध्ययन, अनिंदिता बसाक, पियर्सन एजुकेशन इंडिया
6. पर्यावरण शिक्षा और भारतीय संदर्भ, डॉ. केपी पांडे, डॉ. अमिता भारद्वाज और डॉ. आशा पांडे, विश्व विद्यालय प्रकाश नई दिल्ली
7. पर्यावरण और पर्यावरण शिक्षा, डॉ. राजेश्वर उपाध्याय डॉ. सुधा उपाध्याय, शारदा संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी